## 8.चूडाकर्म

सँस्कारों में यह आठवाँ सँस्कार है । इसे ही केश-छेदन, मुण्डण, चूडाकरण, केश-वपन, चौल आदि अनेक नामों से जाना जाता है । पर इसका प्रसिद्ध नाम मुण्डण है । वस्तुत: चूड़ा शिखर या चोटी को कहते हैं और मस्तिष्क का स्थान खोपड़ी का वीच ऊपर कोमल भाग होता है । चोटी रखने से उस कोमल भाग मस्तिष्क की रक्षा होती है । चूड़ा चूड़ा एक ही है । कहीं-कहीं इसे चूड़ा कर्म भी कहा जाता है । बालों से सम्बन्धित कर्म ही चूडा कर्म है जिसे मुण्डण  कहा जाता है ।

इस सँस्कार को १वर्ष में या ३सरे वर्ष में या जब अच्छा लगे तब ही करना होता है । जब भी करें तो यह देखें कि उत्तरायण काल शुक्ल पक्ष में जो आपके अनुकूल आनन्द मँगल दिन लगे; उस दिन ही कर लें या कोई अन्य दिन ही आपको अनुकूल पड़े तो उस दिन कर लें पर सँस्कार करें अत्यन्त श्रद्धा व प्रसन्नता पूर्वक-म.द. सँस्कार विधि ।

हमें यह जानना चाहिये कि बच्चे के शिर में बाल गर्भ में ही आ जाते हैं अत: जन्म के बाद गर्भ का बाल जब एक-दो बार उतर जाता है तो उनकी जड़ें और मजबूत हो जाती हैं । चोटी रखने से मस्तिष्क का कोमल हिस्सा सुरक्षित हो जाता है । जब वह कोमल हिस्सा भी कालान्तर में मजबूत हो जाये, तब वहाँ का बाल भी कुछ एक बार उस्तरे से काट दें ताकि वहाँ की जड़ें भी मजबूत हो जायें । फिर विधिवत्  अपनी रूचि के अनुसार चोटी भी रख सकते हैं । चोटी रखना धर्म का आन्तरिक लक्षण नहीं अपितु बाह्य लक्षण है । यह एक समझ है । मस्तिष्क भाग मजबूत हो जाने पर चोटी रखें या न रखें यह आपकी समझ और सँस्कार पर निर्भर करता है । पर यह निश्चित बात है कि चोटी मस्तिष्क भाग की रक्षा में सहायक अवश्य है । यह गर्मी-सर्दी में भी मस्तिषक-हिस्सा को संतुलित रखने में सहायक है । बालों की जड़ों को मजबूत बनाने हेतु प्रारम्भ में ही थोड़े-थोड़े बाल उग आने पर दो-तीन बार न्यून्तम उस्तरे से बाल उतार देने चाहिये । इससे सारी जड़े अच्छी मजबूत हो जाती हैं, सिर हल्का हो जाता है और सिर की गर्मी भी ऐसा करने से निकल जाती है । सिर स्वस्थ व निरोग हो जाता है और भविष्य में भी अधिकाधिक यह स्वस्थ रहता है । सिर दर्द, खाज-खुजली, सिर-गर्मी आदि से वचाव हो जाता है  । अगर कोई बिमारी आती भी है तो इसका इसका इलाज सरल हो जाता है क्योंकि बिमारी कम प्रभाव डाल पाती है ।  बाद में बाल भी लम्बे और सुन्दर आने लगते हैं । इस प्रकार मुण्डण सँस्कार रोग-निवृत्ति, आयु-वृद्धि, शारीरिक पुष्टि आदि कारणों से अत्यन्त सार्थक है ।

विशेष ज्ञान-

१. हम जानते हैं कि सिर मस्तिष्क का आवास है । सभी ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ

मस्तिष्क से ही अनुशासित हैं । मस्तिष्क की "संधि" जो खोपड़ी में है (सीमन्तोन्नयन सँस्कार की व्याख्या देखें ) इसका विकास लगभग तीन सालों में पूर्ण हो पाता है । उपर्युक्त काल में मस्तिष्क की सारी संधियाँ लगभग मजबूत हो जाती है । इस कारण तीसरे साल बाल कटवाना अधिक उचित है । तीन साल तक या जब तक पहला बाल नहीं उतरता तब तक गर्भ का बाल ही उन संधियों की रक्षा करता है ।

२. दाँत निकलने से इसका सम्बन्ध- हम देखते हैं कि वच्चे का जब दाँत निकलना प्रारम्भ होता है तब अनेक प्रतिक्रियायें होती दीखती हैं । जैसे- मसूढ़े सूज जाना, मुंह से लार का बहना, आँखें आ जाना, बच्चे में चिड़चिड़ाहट पैदा होना आदि । ऐसी अवस्था में सिर पर बाल होना उचित नहीं है । बाल के उतर जाने पर ही बच्चा इन सभी अवस्थाओं में स्वास्थ्य लाभ करता है । साथ ही बाल कटने पर पुष्ट बाल भी आते हैं । आगे इस सँस्कार की मुख्य विधियों से कुछ विशेष जाने ।

१. चावल -जौ-तिल-उडद ( अन्न का प्रयोग )- प्रारम्भ में ही इन चार प्रकार के अन्न को चार सरावों ( कोई पात्र कटोरी आदि ) में चार कोणों पर रखना लिखा है । सँस्कार के अन्त में इन अन्नों को नाई को दे देने हेतु लिखा गया है । यह मानो नाई के लिये दक्षिणा वा आदर भाव है । अन्न दान पुण्य दायक होता है ; उससे भोजन का निर्माण होता है । दक्षिणा में जहाँ धन राशि दी जाती है वहीं अन्न, वस्त्र वा अन्य उपयोगी वस्तुओं का आदरपूर्वक दान देना भी पुण्य दायक माना जाता है । पर आज कल नाई हो या पुरोहित सबके लिये धन राशि की दक्षिणा देना सबके लिये आसान सा बन गया है । यह देश-काल-परिस्थिति पर निर्भर है; जहाँ पर जो सुविधा है वहाँ वैसा ही कर दिया जाता है । यह प्रचलन पर भी आधारित है । जहाँ जैसा प्रचलन है, वहाँ वैसा किया जाता है । मुख्य उद्देश्य है कि सँस्कार में पधारे मेहमानों की यथायोग्य आदर पूर्वक विदाई देनी है । नाई या पुरोहित दक्षिणा ग्राही होते हैं इस कारण उन्हें यथायोग्य दक्षिणा स्वरुप अन्न, वस्त्र, वर्त्तन वा अन्य वस्तु, धन राशि आदि देकर उनका सत्कार किया जाता है । आज भी विभिन्न वस्तुओं की दक्षिणा देने का रिवाज यत्र-तत्र प्रचलित मिलता है ।

२. गिरे बालों को चुनना- गिरे बालों को उठाने हेतु थोड़ा सा गाय-गोबर का प्रयोग लिखा है । ग्रामीण वातावरण में गाय का गोबर आसानी से उपलब्ध होता था । गिले गोबर का गोला बनाकर उससे बिखरे बालों को आसानी से एकत्रित किया जा सकता है ।
गोबर में बाल सटकर सरलता से अलग हो जाते हैं । प्रयोग के बाद बाल समेत गोबर को नजदीक नदी-तट या जंगल में जाकर मिट् टी में दबाने का आदेश है जिससे सफाई बनी रहे । पर विचारणीय है कि आजकल देश-काल-परिस्थिति में काफी परिवर्त्तन आ चुका है । गोबर को सफाई या उसकी दुर्गन्ध आदि को ध्यान में रखकर नहीं पसन्द किया जाता है ।

कई वार सिर में गलती से कट लग जाने से खून निकलने लगता है और ऐसी स्थिति में गोबर की वैक्ट्रिया से घाव पकने का डर बन सकता है । इस कारण अब काफी स्थानों पर अध कच्ची रोटी पर ठोस बाल रखते हैं और गिरे बालों को गूँदे आंटा से चुन लेते हैं । भारत के पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, दिल्ली, जम्मू, राजस्थान आदि क्षेत्रों में प्राय: गोबर की जगह आँटे का ही प्रयोग होने लगा है । समय के परिवर्त्तन से यह स्वीकार्य्य है । कई बच्चों को गोबर से एलर्जी ( प्रतिक्रिया ) भी सम्भावित है । सुविधा व सुरक्षा की सर्वत्र प्रधान रुप से प्राथमिकता है ।

३. उस्तरे को खौलते गर्म पानी में कुछ देर रखना- नाई जिस उस्तरे से बाल काटता है उसको पहले खौलते पानी में कुछ देर रख छोड़ता है । ऐसा करने से उस्तरा साफ हो जाता है । उसमें लगा दाग, किटाणु या पूर्व का कोई मैल आदि सब साफ होकर वह प्रयोग के लायक हो जाता है ।

४. बाल काटने में दर्भ ( एक प्रकार का घास )- सँस्कार विधि के अनुसार सिर के पाँच भागों से बालों को इकट् ठा करके दर्भगुच्छे को इकट् ठा किये बालों के जड़ के साथ लगाकर दर्भ समेत बाल को कैंची से काटना । दर्भ लगाकर बाल के जड़ों को सावधानी पूर्वक काटने में मदद मिलती है । सिर में चमड़ी को सुरक्षित रखने में सहायता मिलती है । यह प्रक्रिया बालक के पिता द्वारा की जाती है । दो बार बायीं ओर से, दो बार दायीं ओर से और एक बार वीच के भाग से इन ५ भागों से बाल को काटा जाता है । यह इस लिये कि खोपड़ी में ५ संधियाँ ( योग ) होती हैं । यह प्रक्रिया पुरोहित के निर्देशन में मंत्रपूर्वक करवायी जाती है । इन मंत्रों में मस्तिष्क विकास का भाव दर्शाया गया है । इसके बाद पिता मंत्रपूर्वक बच्चे को नाई को सौंप देता है यह कहकर कि वह वच्चे के पूर्ण बाल को सावधानी से काटे । अनुभवी नाई उस्तरे से फिर सम्पूर्ण बालों को विना किसी कट के काट देता है । पिता को दर्भ इसलिये भी चाहिये था कि वह बाल काटने में अनुभवी नहीं है । कट लगने से दर्भ बचाता है । पर नाई को ऐसा कोई दर्भ आदि साधन नहीं चाहिये क्योंकि वह इस कार्य में अत्यन्त अनुभवी है । यह भी विचार योग्य है कि सभी स्थानों पर दर्भ नहीं मिलता फलत: पुरोहित सुविधा के अनुसार बालों को धागों से बाँध कर पिता द्वारा पहली प्रक्रिया करवा लेते हैं । इसमें कोई बाधा नहीं है । देश-काल-परिस्थिति में ऐसा परिवर्त्तन प्रयोग स्वीकार्य है ।

५. यहाँ यह भी विचारणीय बात है कि महर्षि दयानन्द ने बालक हो या बालिका सबका समान अधिकार व सम्मान के साथ यह सँस्कार करना उचित है । केवल यही नहीं वल्कि सारे सँस्कार दोनों के लिये विना किसी भेद-भाव के करना अभिध्येय है । निस्संदेह महर्षि दयानन्द ने लड़का-लड़की में लिंग-भेद न करके सबके लिये समान मर्यादा बताकर आर्य-सँस्कृति का गौरव बढ़ा दिया है । समतावादी का यह सर्वोत्तम उदाहरण है ।

**६. अन्त में बालक के सिर पर दही या मलाई मलकर उसे नहा कर स्वच्छ नये वस्त्र पहनाकर वेदी में पुन: बैठाया जाता है और उसे पुरोहित के निर्देशन में विधिवत् आशीर्वाद दिया जाता है । सिर धोने में दही व मलाई का प्रयोग उचित माना जाता है । यह बाल कटे सिर के लिये ऐंटिसेप्टिक का काम करता है । जन्म के मल को भी बालों के जड़ों से बाहर निकाल देता है । इस प्रकार आशीर्वाद के बाद व्यवस्थानुसार भोजन आदि का औचित्य निभाकर आये सब मेहमानों की आदरपूर्वक विदाई की जाती है । यह एक अच्छी सामाजिकता का प्रतीक है ।**

**Cudakarma/Mundana kaa Mantra vidhi bhaaga**